ICPR
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

**भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।**
**ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥**

**संस्कृत एवं राजनीति विज्ञान विभाग**
**डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग**
**द्वारा आयोजित एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् (ICPR) नई दिल्ली**
**द्वारा संपोषित**

## विश्वदर्शन दिवस के अवसर पर
## द्विदिवसीय सेमिनार

# भारतीय ज्ञान परम्परा में दर्शन का योगदान
# (राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में)

**दिनाँक : - 16-17 फरवरी, 2023 (बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार)**

**स्थान - डॉ. शि. नौ. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग, उत्तराखण्ड**

**संरक्षक**
**प्रो. डॉ. भारती सिंघल**
प्रभारी प्राचार्या

**समन्वयक**
**श्री कीर्तिराम डंगवाल**
सहायक आचार्य

**संयोजक**
**डॉ. मृगांक मलासी**
सहायक आचार्य

**संयोजक**
**डॉ. मदन लाल शर्मा**
सहायक आचार्य

Contact No. 8010583262, 9410578529, 9887990977
E-Mail: seminarkpg77@gmail.com

# भारतीय ज्ञान परम्परा में दर्शन का योगदान (राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ में)

हमारा देश सदैव से ही ज्ञान-परम्परा और ज्ञान-संस्कृति का प्रेरक रहा है। विश्व की अधिकांश प्राचीन सभ्यताएँ ज्ञान के क्षेत्र में भारतवर्ष को अग्रणी मानती रही हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि हम पर थोपी हुई शिक्षा की दृष्टि अंग्रेजों की औपनिवेशिक उद्देश्यों का वहन करने के लिए ही थी उसका भारतीय मेधा और संस्कृति से कोई लेना-देना नहीं था। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि हम अपने मूल स्रोत से अलग होते गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब सम्पूर्ण देश हर प्रकार के परिवर्तन से गुजर रहा था उस समय हम अपनी जड़ों की ओर लौट सकते थे परन्तु हम कुछ न कर सके। स्वतन्त्रता के सात दशक से अधिक समय के पश्चात् आज भी उच्चतम न्यायालय का दरवाजा भारतीय भाषा के लिए अनावृत नहीं हुआ है। भाषा और ज्ञान की दृष्टि से हम जिस तरह परनिर्भर होते गए वह ज्ञान के प्रचार और प्रवाह की दृष्टि से लोकतंत्र के लिए बड़ा घातक सिद्ध हो रहा है। हमें अपनी भारतीय ज्ञान परम्परा का बोध न होने से उसका महत्त्व ही नहीं पता जिस कारण हम हर एक तथ्य के लिए अन्य देशों की ओर दृष्टि जमाए बैठे हैं। इस संक्रमण काल में हम भारत की समझ की भारतीय दृष्टि की संभावना के प्रति भी संवेदनहीन बने रहे। इस कारण पश्चिमी ज्ञान की परम्परा अनायास ही सहज स्वीकार्य हो गई। ज्ञान का केंद्र पश्चिम हो गया और उसी का पोषण एवं परिवर्धन ही औपचारिक शिक्षा का ध्येय बन गया और इस कार्य के लिए अंग्रेजी भाषा को भी अबाध रूप से प्रश्रय मिलता गया। भारतीय भाषाएँ अपने ही देश में अपनों के ही हाथों बहिष्कृतप्राय हो गई।

इस तथ्य से प्रायः सभी सहमत होंगे कि प्राचीन समय से लेकर अद्यावधि भारत ने ज्ञान का निर्यात दूसरी सभ्यताओं और संस्कृतियों को किया है। ज्ञान और परम्परा ये दो शब्द ही स्वयं में सम्पूर्ण तथ्यों को आत्मसात् किए हुए हैं। जब इसमें दर्शन शब्द को जोड़ दिया जाता है तो सृष्टि अथवा ज्ञान का कोईभी पक्ष अछूता नहीं रहता। शास्त्र, काव्य, वेद-वेदांगों, विद्यास्थान ६४ कलाएँ आदि सभी कुछ इसमें समाहित है। भारतीय ज्ञान परम्परा में 'दर्शन' ने शास्त्र और सामान्य इन दोनों रूपों में देश का पथ-प्रदर्शन किया है। चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र हो, आर्थिक, सांस्कृतिक अथवा आध्यात्मिक, सभी क्षेत्रों में भारतीय परम्परा में अथाह ज्ञान का भण्डार है।


## डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग


डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग निकटतम रेलवे स्टेशन ऋषिकेश से 170 किमी की दूरी पर बद्रीनाथ तीर्थ के रास्ते में अलकनंदा और पिंडर नदी के संगम पर स्थित है। कर्णप्रयाग, पंचप्रयाग में से एक है। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग की स्थापना 1979 में हुई। 25-09-2014 शासकीय डिग्री कॉलेज, कर्णप्रयाग का नाम बदलकर (स्वर्गीय) डॉ शिवानन्द नौटियाल राजकीय महाविद्यालय कर दिया गया। डॉ. शिवानन्द नौटियाल एक प्रसिद्ध राजनीतिक व्यक्तित्व, एक समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता, विद्वान थे जिन्हें गढ़वाल हिमालय की संस्कृति और विरासत पर कई जानकारीपूर्ण पुस्तकों के लेखक और अविभाजित उत्तर प्रदेश में पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री होने का श्रेय दिया जाता है। महाविद्यालय अपने उच्च आदर्शों एवं छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु सदैव तत्पर है।

## उपविषय

1. प्राचीन भारतीय ज्ञानपरम्परा एवं दर्शन 2. प्राचीन भारतीय राजनैतिक चिन्तन के दार्शनिक पक्ष 3. प्राचीन भारतीय आर्थिक चिन्तन के दार्शनिक पक्ष 4. प्राचीन भारतीय सामाजिक चिन्तन के दार्शनिक पक्ष 5. भारतीय शिक्षा प्रणाली 6. उपनिषदों में वर्णित भारतीय विद्या 7. भारतीय मेधा का वैश्विक पटल पर योगदान 8. शिक्षा दर्शन के विविध आयाम 9. गुरुकुल प्रणाली और भारतीय विद्या 10. भारतीय विद्या का स्वरूप 11. आन्वीक्षिकी, त्रयी वार्ता एवं दण्डनीति
इसके अतिरिक्त शीर्षक से सम्बन्धित अन्य विषय भी लिए जा सकते हैं।

आप सभी विद्वानों एवं शोधार्थियों को पत्र वाचन हेतु आमन्त्रित किया जाता है।
आपका शोधसार 300 शब्दों में होना चाहिए। पूर्ण पत्र हेतु 3000 से 5000 तक शब्द सीमा निर्धारित है। शोधपत्र संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में स्वीकार्य होगा। संस्कृत एवं हिन्दी के लिए Arial Unicode Font एवं अंग्रेजी हेतु Times New Roman मान्य होगा। शोध पत्र पूर्ण रूप से मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए। शोध-पत्र चयन समिति द्वारा चयनित शोध पत्रों को पुस्तक में ISBN के साथ प्रकाशित कराया जाएगा। निर्धारित तिथि के पश्चात् भेजे गए शोधपत्र मान्य नहीं होंगे। समानान्तर सत्रों में प्रतिभागियों द्वारा शोधपत्र वाचन किया जाएगा। प्रतिभागियों को समस्त कार्यक्रम में उपस्थित रहना अनिवार्य है।

### Important Dates

**Last Date for Submission of Abstract 20 January, 2023**
**Last Date for Full Paper Submission 05 February, 2023**

**शोध पत्र seminarkpg77@gmail.com पर प्रेषित करें।**

### Registration Link

https://forms.gle/vzdz5ct8M1zvzATp9

### Follow this link to join WhatsApp group

https://chat.whatsapp.com/DRFCP2vivIFAVGNmhLyuHv

### आयोजन समिति

डॉ. चन्द्रावती टम्टा
डॉ. कविता पाठक
डॉ. हरीश बहुगुणा
श्री रवीन्द्र सिंह नेगी
डॉ. पंकज कुमार

**सेमिनार से सम्बन्धित जानकारी हेतु सम्पर्क करें -**
**9887990977, 8010583262, 9410578529**